पुराणों की ऐतिहासिकता पर एक शोधपुर्ण नजर

A COMPLETE RESEARCH LOOK AT THE HISTORY OF PURANAS

Ritu Aggarwal

Assistant Professor
Waheguru College
Abohar, Punjab, India

"पुराण झरोखे है अमर भारतीय संस्कृति के पुराण दिव्य गाथाओं के अनोखे भंडार है।"

"Puran Jharkhe : Of immortal Indian culture, Puranas are a unique storehouse of divine tales"

सारांश :–

पुराणों पर मध्यकाल से ही विवाद होता आया है। अंग्रेज काल में अंग्रेजों ने इसे अप्रमाणित ग्रन्थ कहना शुरू किया था फिर उनका अनुशरण हमारे यहां के तथाकथित इतिहासकारों ने भी किया। कहते है कि इस दुष्प्रचार के चलते ही आर्य समाज के लोग भी ऐसा ही मानते है। दरअसल अंग्रेजी के मिथ शब्द के कारण बहुत भ्रांतियां फैली और इसी शब्द के कारण पुराणों को अप्रमाणिक मान लिए जाने का प्रचन चला। पुराण का पुरातन शब्द से सम्बन्ध है। पुरातन अर्थात सबसे प्राचीन।

मूल शब्द– पुराण, अंग्रेज, अप्रमाणिक, भारत, वेद

उद्धेश्य :–

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- ❖ पुराणों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेगें।
- ❖ पुराणकालीन संस्कृति के बारे में जान सकेगें।
- ❖ पुराणकालीन सभ्यता को परिभाषित करने में समर्थ हो सकेगें।
- ❖ पुराणों की संख्या जान सकेगें।
- ❖ पुराणों का महत्त्व जान सकेगें

प्रस्तावना :–

ईसा पूर्व पाँचवी से चौथी शताब्दी में पुराण अस्तित्व में आ चुके थे। वर्तमान में उपलब्ध पुराण तीसरी–चौथी शताब्दी ईसवी (गुप्तकाल) के आसपास के थे। सर्वप्रथम 'पार्जिटर' नामक विद्वान ने 'एन्शेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशंस' में पुणारों के ऐतिहासिक महत्त्व की ओर ध्यान आकृष्ट किया। 'रोमिला थापर' ने अपनी हाल की रचनाओं के पौराणिक प्रमाणों की उपयोगिता पर नवीन प्रकाश डाला है।

पुराण, हिन्दुओं के धर्म–सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ है, जिसमें संसार–ऋषियों–राजाओं के वृतान्त आदि है। ये वैदिक काल के बहुत समय बाद के ग्रन्थ है। भारतीय जीवन–धारा में जिन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण प्राचनी भक्ति ग्रन्थों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते है। पुराणों में अलग–अलग देवी–देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएं कही गयी है। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण दिया गया है।

पुराण के अर्थ :–

"पुराण" का शाब्दिक अर्थ है– 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। 'पुरा' शब्द का अर्थ है– अनागत व अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है– कहना या बतलाना। रघुवंश में पुराण शब्द का अर्थ है "पुराण पत्रापग मागत्ररम" एवं वेदिक ग्रन्थों में "प्राचीनः वृतान्तः" दिया गया है।

सांस्कृतिक अर्थ से हिन्दू संस्कृति के वे विशिष्ट धर्मग्रन्थ जिनमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक का इतिहास– वर्णन शब्दों से किया गया हो, पुराण कहे जाते है। पुराण शब्द का उल्लेख वैदिक युग के वेद सहित आदितम साहित्य में भी पाया जाता है, अतः ये सबसे पुरातन (पुराण) माने जा सकते है।

अथर्ववेद के अनुसार "ऋचः सामानि छन्दासि पुराण यजुषा सह" अर्थात पुराणों का आविर्भाव ऋकृ, साम, यजुस् और छन्द के साथ ही हुआ था।

वृद्धारष्यकोपनिषद् तथा महाभारत में कहा गया है कि "इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृहंयेत्" अर्थात् वेद का अर्थविस्तार पुराण के द्वारा करना चाहिये। इनसे यह स्पष्ट है कि वैदिक काल में पुराण तथा इतिहास को समान स्तर पर रखा गया है।

पुराणों के लक्षण :–

अमरकोप आदि प्राचीन कोशों में पुराण के पांच लक्षण माने गये है :–

- **सर्ग – सृष्टि**
- **प्रसिर्ग – (प्रलय, पुनर्जन्म)**
- **वंश – देवता व ऋषि सूचियां**
- **मन्वत्तर – (चौदह मनु के काल)**
- **वशांनुचरित – सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरि**त

सर्गश्र प्रतिसर्गश्र वंशों मन्वन्तराषि च।
वंशानुचरित चैव पुराणं पच्चलक्षणम्।।

उद्धेश्य :–
प्राचीनकाल से पुराण देवताओं, ऋषियों, मनुष्यों सभी का मार्गदर्शन करते रहे है। पुराण मनुष्य को धर्म व नीति के अनुसार जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते है। पुराण मनुष्य के कार्यों का विश्लेषण कर उन्हें दुष्कर्म करने से रोकते है। पुराण वस्तुतः वेदों का विस्तार है। वेद बहुत ही जटिल तथा शुष्क भाषा–शैली में लिखे गए है। वेद व्यास जी ने पुराणों की रचना और पुनर्रचना की। कहा जाता है कि "पूर्णात् पुराण" जिसका अर्थ है जो वेदों का पूरक हो, अर्थात् पुराण (जो वेदों की टीका है) वेदों की जटिल भाषा में कही गई बातों को पुराणों में सरल भाषा में समझाया गया है।

पुराण साहित्य में अवतारवाद को प्रतिष्ठित किया गया है। निर्गुण निराकार की सत्ता को मानते हुए सगुण साकार की उपासना करना इन ग्रन्थों का विषय है। पुराणों में अलग–अलग देवी–देवताओं को केन्द्र में रखकर पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म और कर्म–अकर्म की कहानियां है। प्रेम, भक्ति, त्याग, सेवा, सहनशीलता ऐसे मानवीय गुण है, जिनके अभाव में उन्नत समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। पुराणों में देवी–देवताओं के अनेक स्वरूपों को लेकर एक विस्तृत विवरण मिलता है। पुराणों में सत्य की प्रतिष्ठा के अतिरिक्त, दुष्कर्म का विस्तृत चित्रण भी पुराणकारों ने किया है। पुराणकारों ने देवताओं का दुष्प्रवृतियों का व्यापक विवरण दिया है, लेकिन मूल उद्धेश्य सद्भावना का विकास और सत्य की प्रतिष्ठा ही है।

पुराणों की प्राचीनता :–
ऐसा माना जाता है कि अंग्रेज काल के पहले मुगल काल में ओर उसके पहले बौद्ध काल में पुराणों के साथ छेड़खानी की गई जिसके चलते उसकी विरोधाभासी भाषा के कारण उसे अप्रमाणित ग्रन्थ माना जाता है। लेकिन आवश्यकता है पुराणों पर अनुसंधान और रिसर्च को बढ़ावा देने की, तभी इसका सच निकलकर सामने आएगा।

पुराणों में दर्ज है प्राचीन भारत का इतिहास। वह इतिहास जिसे जानकर आप हैरान रह जाएंगे। अंग्रेजों ने बुध के पूर्व के भारतीय इतिहास को पूर्णतः इतिहास से काटकर अलग करने का भरसक प्रयास किया और आज स्कूलों और कॉलेजों में भारत के इतिहास की शुरूआत बौद्धकाल से मानी जाती है। इसके पूर्व बस हम सिन्धुघाटी की सभ्यता से ही शुरू हुए है। आज भी यही शिक्षा चल रही है, जब कि देश में 30 हजार साल पुरानी सभ्यता के अवशेष भारत में मौजूद है। सिन्धु घाटी से भी पहले मध्यप्रदेश के नेमावर से बढ़वानी क्षेत्र तक विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता फैली थी जिसके अवशेष आज भी पाए जाते है।

गौरतलब है कि पहले विदेशी आंक्राताओं ने बामियान पुरूषपुर (पेशावर) कराची, चंडीगढ़, श्रीनगर, सोमनाथ, मथुरा, काशी, अयोध्या, प्रयाग, लुक्विनी, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, सांची, पाटलिपुत्र, नालंदा, पंचानेर, पावागढ़, कौशाम्बी, लखनऊ (लक्ष्मणपुर), नासिक, आगरा, राजगिरि, भोपाल (भोजपाल), उज्जैन, रामेश्वरम्, कोलकाता, ढाका, त्रिपुरा आदि महत्त्वपूर्ण हिन्दू स्थानों पर आक्रमण करके यहां के प्रमुख मंदिरों, महलों और शिक्षा के केन्द्रों को ही नष्ट नहीं किया बल्कि हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों की पांडुलिपियों को ढूँढ–ढूँढ कर जलाया गया। इन तुर्क आक्रमणकर्त्ताओं में गजनवी, तेमुरलंग, औरंगजेब, मोहम्मद गौरी, बाबर, बख्तियार खिलजी के नाम प्रमुखता से लिए जाते है। इस विध्वंस के बाद पुराणों को अप्रमाणिक कहना उचित नहीं होगा।

पुराणों की संख्या :–
पुराणों की संख्या मुख्यतः अठारह बताई गई है :–
1) ब्रह्मपुराण
2) पदम पुराण
3) विष्णु पुराण,
4) शिव पुराण, (वाक पुराण)
5) भागवत पुराण, (देवी भागवत पुराण
6) नारद पुराण,
7) मार्कण्डेय पुराण,
8) अग्नि पुराण,
9) भविष्य पुराण,
10) ब्रहादेवर्त पुराण,
11) लिंग पुराण,
12) वाराह पुराण,
13) स्कन्द पुराण,
14) वामन पुराण,
15) कर्म पुराण,
16) मत्स्य पुराण,
17) गरूड़ पुराण,
18) ब्रह्मण्ड पुराण

उप–पुराण :–

गणेश पुराण, नृसिंह पुराण, कल्कि पुराण, एकाम्र पुराण, कपिल पुराण, दत्त पुराण, श्री विष्णुद्यर्मोतर पुराण, मुद्गल पुराण, सनत्कुमार पुराण, शिवधर्म पुराण, आचार्य पुराण, मानव पुराण, उश्ना पुराण, वरूण पुराण, कालिका पुराण, महेश्वर पुराण, साम्ब पुराण, सौर पुराण, पराशर पुराण, मरीच पुराण और भार्गव पुराण, हरिबंश पुराण, सौर पुराण और प्रज्ञा पुराण भी शामिल है।

पुराणों के रचियता :–

पुराण शब्द 'पुरा' व 'अण' शब्दों की सन्धि से बना है पुरा का अर्थ है – 'पुराना' अथवा प्राचीन और अण का अर्थ होता है कहना या बतलाना। सवाल यह उठा है कि पुराण किसने कहे, लिखे और कितने है?

एक वेद व्यास परशुराम के बाद और राम के पहले हुए दूसरे वेद व्यास भगवान कृष्ण के समय में हुए। पहले वेद व्यास ने वेदों को पुनः स्थापित किया और दूसरे वेद व्यास ने महाभारत और पुराणों कुछ पुराण सहित अनेक ग्रन्थ लिखे थे। पुराणों अनुसार ही अब तक 27 वेद व्यास हो चुके है। कृष्ण के समय के पराशर मुनि के पुत्र को 28वां वेद व्यास माना जाता है। जिनका नाम कृष्ण द्वैयायमान था। पहले वेद व्यास विष्णु का अवतार थे।

कहते है कि संसार की रचना करते समय ब्रह्मा ने एक ही पुराण की रचना की थी जिसमें एक अरब श्लोक थे। लेकिन बाद में इस पुराण को वेद व्यासों ने समय–समय पर कई भागों में विभक्त किया। हालांकि इतिहासकार मानते है कि पुराणों की रचना वैदिक काल के काफी बाद की है, ये स्मृति विभाग में रखे जाते हैं। मूलतः 18 पुराण माने जाते हैं जिसमें चार लाख श्लोक है। कहते है कि 18 पुराण महर्षि वेद व्यास ने लिखे है। वेद व्यास मुनि पराशर के पुत्र थे और कौरवों के पिता थे। लेकिन यहां यह बताना जरूरी है कि सभी पुराण वेद व्यास जी ने नहीं लिखे। उनमें से कुछ पुराण अन्यों ने लिखे हैं जैसे विष्णु पुराण को उनके पिताश्री पराशर मुनि ने लिखा है तो उपपुराणों को समय–समय पर अन्य ऋषियों ने लिखा। इसमें से पुराण तो बौद्धकाल और मध्यकाल में लिखे गए माने जाते है जैसे ब्रहावेवर्त पुराण और भविष्य पुराण आदि।

यद्यपि आजकल जो पुराण मिलते है उनमें से अधिकतर पीछे से बने हुए या प्रक्षित विषयों से भरे हुए हैं तथापित पुराण बहुत प्राचीन काल से प्रचलित थे। वेदों के अन्तर्गत आने वाले छांदोग्य उपनिषद् में लिखा है कि पुराण वेदों में पांचवा वेद है। इससे यह सिद्ध है कि अत्यंत प्राचीन काल में वेदों के साथ पुराण भी प्रचलित थे जो यज्ञ आदि के अवसरों पर कहे जाते थे।

पुराणों का एक और सत्य :–

ब्रह्मा, मत्स्य, विष्णु ब्रह्मण्ड आदि सब पुराणों में ब्रह्मा पुराण पहला कहा गया है। शोधकर्ता पुराणों में सबसे पुराने पुराण ब्रह्मा पुराण और विष्णु पुराण को मानते है क्योकि पुराण के पांचो लक्षण भी उस पर ठीक बैठते है। उसमें सृष्टि की उत्पत्ति और लय, मन्वतरों तथा वेद व्यास द्वारा उनके विभाग, सूर्यवंश, चंद्रवंश आदि का वर्णन है। इन पुराणों के बाद मत्स्य पुराण, स्कन्द और वराह पुराण की प्रतिष्ठा है, फिर शिव और देवी भागवत पुराण। कुछ लोगों का कहना है कि वायु पुराण ही शिव पुराण है। लेकिन कुछ पुराणों में कलिकाल के राजाओं में मगध में मौर्य राजाओ तथा गुप्तवंश के राजाओं तक का उल्लेख मिलता है तो इससे सिद्ध होता है कि या तो पुराणों में इनकी वंशावली जोड़ी गई या ये पुराण इसी काल में लिखे गए होंगे। पुराणों में श्रीमद्भागवत पुराण का ही प्रचार सबसे अधिक है क्योंकि उसमें भक्ति के महात्म्य और श्री कृष्ण की लीलाओं का विस्तृत वर्णन है। इसमें 12 स्कन्धों के भीतर पुरातन सभी प्रसंगों को समेटा गया है। अग्निपुराण में इतिहास के साथ–साथ ही आयुर्वेद, व्याकरण, रस, अलंकार, शस्त्र–विद्या आदि अनेक विषयों क वर्णन है।

हालांकि शोधकर्ता मानते है कि प्राचीनकालीन पुराणों के खोजे जाने और नष्ट हो जाने के बाद आजकल के जो पुराण मिलते है उन्हें मध्यकाल में रचा गया होगा और जहां–तहां से मिले बिखरे हुए सूत्रों का समटने का प्रयास किया गया होगा। इसलिए पुराणों में कहीं–कहीं तात्कालिक परिस्थिति का वर्णन और कुछ ऐसे श्लोक भी मिलते है जिनको मूल पुराणकार से अलग रचा हुआ माना जा सकता है। हालांकि यह पुराण मथुरा और काशी आदि के कंठस्थ ब्राह्मणों द्वारा सुनकर लिखे गए पुराण हैं, तो उन्होंने अपनी पीढ़ियों से जितना सुना उतना कंठस्थ किया। अधिकतर विद्वान मानते है है कि शंकराचार्य के काल में पुराणों और वेदों का पुनरूद्धार किया गया लेकिन मध्यकाल में आंक्राताओ ने इन्हे नष्ट कर दिया था।

अधिकांश पुराणों का वर्तमान रूप हजार वर्ष के भीतर का है इसका कारण यह है कि यदि यह पुराण प्राचीन होते तो इनमें किसी जाति और धर्म विशेष के प्रति द्वैष वाली भावनाओं का प्राचार नहीं मिलता। जैसे शूद्र, मलेच्छ यतनादि के बारे में उल्लेख करना मत्स्यपुराण में स्पष्ट लिखा है कि पहले पुराण एक ही था उसी से 18 पुराण हुए। शिव पुराण के अन्तर्गत रेग माहात्म्य में लिखा है कि अठारहों पुराणों के वक्ता मध्यवती सुत व्यास है।

ब्राह्मण्ड पुराण में लिखा है कि वेद व्यास ने एक पुराण संहिता का सकंलन किया था। इसके आगे की बात का पता विष्णु पुराण से लगता है। उसमें लिखा है कि व्यास का एक रोम हर्षण नाम का शिष्य था जो सूत जाति का था। व्यास जी ने अपनी पुराण संहिता उसी के हाथ में दी। रोम हर्षण के छह शिष्य थे– सुमति, अग्निवर्चा, मित्रय शांशपायन, अकृतव्रण और सावर्णी। इनमें से अकृत–व्रण सावर्णी और शांशपायन ने रोम हर्षण से पढ़ी हुई पुराण संहिता के आधार पर और एक संहिता बनाई। वेद व्यास ने जिस प्रकार मंत्रों का संग्रह कर उनका संहिताओं में विभाग किया उसी प्रकार पुराण के नाम से चले आते हुए वृतों का संग्रह कर पुराण संहिता का संकलन किया। उसी एक संहिता को लेकर सूत के चेलों के तीन और संहिताएं बनाई। इन्हीं संहिताओं का आधार पर अठारह पुराण बने होंगे।

आजकल जो पुराण मिलते हैं उनमें विष्णु और ब्रह्मा, ब्रह्मण्ड पुराण बौद्धकाल के जान पड़ते है, क्योंकि उनकी रचनावली में अन्य पुराणों से भिन्नता है जो उसी काल को वर्णित करती है। विष्णु पुराण में 'भविष्य राजवंश' के अन्तर्गत गुप्तवंश के राजाओं तक का उल्लेख है। जावा के पास वाली टापू पर हिन्दुओं के पास एक ब्रह्मण्ड पुराण मिला है। इन हिन्दुओं के पूर्वज ईसा की पांचवी शताब्दी में भारतवर्ष में पूर्व के द्वीपों में जाकर बसे थे।

बाली वाले ब्रह्मण्ड पुराण में भविष्य राजवंश प्रकरण नहीं है आ जनमेजय के प्राचीन आधितीमकृष्ण तक का नाम पाया जाता है। उससे यह सिद्ध होता है कि विष्णु पुराण के बाद के राजवंशें की वंशावली को जोड़ा गया होगा लेकिन यह तो तय हो गया कि उसका बाकी हिस्सा प्राचीन है अर्थात् महाभारत काल का ही है।

हालांकि यह तो तथ्य सिद्ध होता है कि पुराणों की रचना महाभारत काल में पराशर मुनि, उनके पुत्र वेद व्यास और उनके शिष्यों पल, जैमिन, वैशम्पायन, सुमन्तमुनि और रोम हर्षण ने मिलकर की थी। उसके बाद शिष्यों की परम्परा ने उस वेद और पुराण के ज्ञात के

बौद्धकाल तक जिंदा बनाये रखा। मध्यकाल में बिन्दुओं के ग्रन्थों सहित मंदिरों और स्मारकों को नष्ट किए जाने का एक खतरनाक दौर चला। और अंग्रेजकाल में भारतीयों को अपने गौरवपूर्ण इतिहास से अलग करने की साजिश रची गई जिसके चलते अखण्ड भारत जाति और धर्म में बंटकर खण्ड–खण्ड हो गया।

पुराण का एतेहासिक महत्त्व :–

पुराण भारतीय संस्कृति के प्राण है। कोई भी व्यक्ति इस कथन की सत्यता से इन्कार नहीं कर सकता। इसके कारण है– वेदों ने भारतीय संस्कृति को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। वेदों में निहित बीज – सूत्रों ने उपनिषदों की चिंतन धारा को अपना किया जिससे भारतीय दर्शन की सुरसरि प्रवाहित हुई। किन्तु इनसे भारतीय दर्शन भारतीय चिंतन तथा भारतीय आध्यात्मिक विचार प्रणाली ही निर्मित हुई। भारतीय जीवन को जीवन–रस जीवन शैली, जीवन व्यवहार जीवन की धड़कन तथा लोक–व्यवहार और लोक–जीवन का व्यवस्थित स्वरूप दिया पुराणों ने।

भारतीय पुराण साहित्य विशाल है विस्तृत है गहन है। उसे सचमुच ही जीवन व्यवहार सिन्धु की उपमा दी जा सकती है। जीवन–व्यवहार के अनन्त क्रिया कलापों घटनाओं, कर्त्तव्यों–अकर्त्तव्यों तथा कार्य–विधियों, कार्य–प्रणालियों मे ऐसा और भी पक्ष या पहलू नहीं बचा है, जो पुराणकारों की नजरों से औझल हुआ हो या जिस पर उनकी लेखनी ने प्रकाश न दिया हो। यह प्रकाश उन्होंने दिया है व्याख्याओं या विवेचनाओं के रूप में, प्रश्नों और उत्तरों के रूप में, कथाओं या वार्ताओं के रूप में, आख्यानों, उपआख्यानों या दृष्टांतों के रूप में। अब यह सब भारत के लोक–जीवन में इस प्रकार रच बस गया है कि इन सबका प्रात्यक्षिक रूप दैनिक जीवन व्यवहार में देखकर जब पुराणों को पढ़ते समय इनके सैंद्धातिक रूप की वहां पहले से ही उपस्थिति से साक्षात्कार होता है तो मन चमत्कृत हो जाता है और लोक–जीवन की हर धड़कन में इनकी गहरी पैठ देखकर मन आश्चर्यचकित, रोमांचित और गद्‌गद् हुए बिना नहीं रहता। दीर्घकाल से व्यवहार में घिसते–घिसते निश्चय ही बहुत सी चिंतन धाराओं का स्वरूप मुड़–तुड़कर अपना मूल स्वरूप खो चुका है फिर भी यह बात समझने में देर नहीं लगती कि इनकी जड़े पुराणों में है। ऊपर कहा जा चुका है कि पुराण साहित्य अत्यंत विशाल, विस्तृत व गहन है। अतः कोई भी जिज्ञासु अपने किसी भी प्रश्न या शंका का उत्तर पुराणों के विश्वकोष में खोज सकता है। हाँ यह सही है कि वह उत्तर पुराणकारों की तत्कालीन चिंतन धाराओं और चिंतन स्तरों के अनुकूल ही होगा। बाद में चितंकों द्वारा किये गए संशोधनों के प्रभाव दिखाई देंगे ही।

पुराणों की विषयवस्तु :–

पुराणों में गाथाएं है, कथाएं है। सृष्टि की रचना और प्रलय की प्रक्रिया के सम्बन्ध में कल्पना की अद्‌भुत उड़ाने है। जीवन के प्रेय व श्रेय, कर्म–अकर्म, धर्म–अधर्म, बंधन–मोक्ष, लोक–परलोक, सुमार्ग–कुमार्ग और स्वर्ग–नरक के विश्लेषणात्मक विवरण है। प्रवृत्ति–निवृत्ति (कर्म–सन्यास) विधि–निषेध, यम–नियम के विस्तृत विवेचन है और विभिन्न अवतारों, देवताओं, तीर्थों, पहाड़ों, पर्वों, व अनुष्ठानों की आवश्यकताओं और महात्म्य के अर्थपूर्ण विवरण है। संम्राटों व राजाओं के वंशें व कार्यों उनके उत्थान–पतन उनकी उपलब्धियों व भूलों की अर्थगर्भित कहानियां है तथा भूगोल–खगोल, ज्योतिष, सामुद्रिक स्थापत्य, व्याकरन, छन्द, विज्ञान, आयुर्वेद, प्रेत–कल्प, अध्यात्म, ब्रह्मविद्या आदि अनेकानेक विषयों के अवलोकन चितंन व कल्पना पर आधारित अद्भभुत विवरण है।

"पुराण कोष ज्ञान के, कथाओं के, सीखों के, पुराण विविध विद्याओं के विशद आगार है।"

निष्कर्ष :–

इस प्रकार से भारतीय धर्म तथा संस्कृति के स्वरूप की जानकारी पुराणों से प्राप्त की जा सकती है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा भौगोलिक आदि अनेक दृष्टिकोण से पुराण का विशिष्ट महत्त्व है। पुराणों का उद्धेश्य वेदों के जटिल एवं दार्शनिक उपदेशों को ऐतिहासिक तथ्यों और आख्यानों के द्वारा जनसाधारण तक सुगमता से पहुंचना था। पुराणों के द्वारा प्राचीन इतिहास की जानकारी आसानी से प्राप्त होती है। साहित्यिक दृष्टि से पुराणों के द्वारा प्राचीन इतिहास की जानकारी आसानी से प्राप्त होती है। साहित्यिक दृष्टि से पुराणों का महत्त्व बढ़ जाता है। क्योंकि भारतीय काव्य–ग्रन्थों का निर्माण पुराण से कथावस्तु को लेकर हुआ है। व्याकरण तथा छंद विधान पुराणों की देन है। 'अग्निपुराण' से काव्य शास्त्र के विषयों की जानकारी उपलब्ध होती हैं। इस प्रकार यदि मनुष्य का इतिहास लिखना हो तो सृष्टि के आरम्भ से ही उसके विकास की कथा लिखनी ठीक है। इतिहास लिखने की यही पौराणिक प्रकार का आदर्श है।" अतः किसी मानव समाज का इतिहास तभी पूर्ण समझा जायेगा जब उसकी कहानी सृष्टि के आरम्भ से लेकर वर्तमान काल तक क्रमबद्ध रूप प्रस्तुत किया जाये। जब तक किसी देश की कथा सृष्टि से प्रारम्भ से न लिखी जाये तब तक उसे अधूरा समझना चाहिए। इतिहास की इस वास्तविक कल्पना को पुराणों में देखा जा सकता है।

"पुराण व्यवहारिक निचोड़ है ऋषि चिंतन के पुराण भारतीय जीवनशैली के आधार है।"

"Puran practical result: Of sage contemplation, Puranas are the basis of Indian way of life"

सन्दर्भ :–

- 1) सौरभ चौभे, प्राचीन भारत, पृ.सं. 17, 19
- 2) पप्पू सिंह प्रजापत, प्राचीन भारत, पृ.सं. 10
- 3) एस.के. पाण्डे, प्राचीन भारत, पृ.सं. 11